"गोविंद मिश्र" के उपन्यास "वह अपना चेहरा" में सामाजिक चेतना

सुधीर सिंह,
(शोध छात्र)
हंडिया पी0जी0 कॉलेज हंडिया प्रयागराज

भुमिका

प्रस्तुत शोध पत्र में शोधार्थी ने "गोविंद मिश्र" जी के उपन्यासों में निहित सामाजिक चेतना का वर्णन संक्षिप्त रूप में करने का प्रयास किया हैं, "गोविंद मिश्र" द्वारा लिखे उपन्यास वह अपना चेहरा में सामाजिक चेतना - वह अपना चेहरा एक छोटा उपन्यास हैं , जिसमें गोविंद मिश्र जी ने बताया हैं , कि एक आहत व्यक्ति को मनोवैज्ञानिक ढंग से अच्छी तरह निखारा गया हैं , गोविंद मिश्र जी ने बताया हैं , कि सरकारी दफ्तरों में बाबू (क्लर्क) से दुनिया किस तरह से परेशान हैं तथा वहां पर पदासीन अनेक पदों पर पदाधिकारियों की संज्ञाओ से नियंत्रित हैं । वह इन ऊपरी श्रृंखलाओं को तोड़कर मानवीय धरातल पर क्यों नहीं पहुंचता हैं , इसलिए चरित्र और प्रत्यक्ष या परोक्ष रीति से संस्कृति के शाश्वत स्रोतों की ओर लिए चलता हैं ।

"वह अपना चेहरा" में सामाजिक चेतना

प्रस्तुत शोध पत्र में शोधार्थी ने "गोविंद मिश्र" जी के उपन्यास की कहानी का संक्षिप्त परिचय दीया हैं , जो केशव प्रसाद के प्रति समर्पित हैं जो अनिश्चित और दुई तरफा दृष्टिकोण हैं उसी के इर्द-गिर्द घूमती रहती हैं तथा केशव दास की रचना से अवांछनीय संबंध भी रखती हैं , रचना नायक की एक जमाने की मित्र और अब कार्यालय में सहकारी हैं , इस उपन्यास में नायक की स्थिति दुविधा युक्त हैं ।

सामाजिक उत्तेजना के आपसी समायोजन और उन गतिविधियों के प्रति प्रतिक्रिया के संबंध में अर्थ की चेतना की उत्पत्ति पर जोर देता हैं और विस्तृत करता हैं, जिसकी उन्होंने मध्यस्थता की ।

अर्थ की चेतना मुख्य रूप से व्यक्ति की ओर से दृष्टिकोण की चेतना में होती हैं प्रतिक्रिया करने की तत्परता ; चेतना की सामग्री में विभिन्न तत्वों को अलग करने की शक्ति उत्तेजना और इमेजरी के क्षेत्र से संबंधित है ; और इशारों का नियंत्रण और व्याख्या एक महत्वपूर्ण कारक है। सामाजिक चेतना के विकास पर ध्यान केंद्रित करता हैं ।

"मिश्र" जी ने इस उपन्यास में नायक और नायिका के बीच प्रेम भावना का जो संबंध हैं उसको हल्का सा संकेत देकर छोड़ दिया मिश्र जी ने यह प्रसंग प्रस्तुत किया । जो नारी का शारीरिक शोषण हो रहा था , उसे प्रस्तुत करके नारी को जगाने का काम किया हैं , मिश्रा जी की इस उपन्यास में नारी शक्ति को जागृत करना तथा नारियों संबंधित बड़े अधिकारी जो दफ्तर में कार्य करते थे ।

वह अपने निचले स्तर के कार्यकारिणी के प्रति अपना व्यवहार निम्न स्तर के रखते हैं , जिसका उल्लेख हमें गोविंद मिश्र जी के

"वह अपना चेहरा" नामक उपन्यास में सामाजिक चेतना के रूप में निखारा हैं ।

गोविंद मिश्र द्वारा दिए गए साक्षात्कार को इस शोध पत्रिका में दर्शाया जा रहा हैं, यह शोध मेरे द्वारा लिए गए गोविंद मिश्र जी के दरमियान हैं , गोविंद मिश्र जी के साहित्य संसार के एक भाग उपन्यास पर केंद्रित यह साक्षात्कार प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से बहुत सारे सवालों का जवाब इसमें दिया गया हैं , मेरे द्वारा पूछे गए उल्टी-सीधी सवालों को उन्होंने बहुत ही सहज ढंग से उत्तर दिया ।

गोविंद मिश्रा जी ने अपना चेहरा के विषय में बताया कि यह मेरा पहला उपन्यास हैं , जिसके अंदर वह के बाद एक ऑब्लिक (/) लगाया हैं माने जिसका अर्थ केशवदास का चेहरा जो खुराक ब्यूरोक्रेटहैं और "मैं" का चेहरा अर्थात एक नया लड़का नौकरी ज्वाइन करता हैं तथा दूसरा कैसे-कैसे धीरे-धीरे केशवदास के सांचे में ढल तक चला जाता हैं , माने पूरा तंत्र ऐसा हैं कि किसी को भी अपने में जज्ब करके अपने जैसा बना लेता हैं ।

वह अपना चेहरा उपन्यास रचना का उद्देश्य जीवन के प्रति अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करता हैं लेखक के अपने पात्रों के माध्यम से अपना ही जीवन अनेक विषयों दृष्टिकोण को दिखाता हैं और जीवन की विचित्र अवस्था में जा जानने की कोशिश भी करता हैं कि व्यक्ति की मानसिक प्रतिक्रिया कैसे चल रही हैं इन पर प्रकाश डालना भी उपन्यास का उद्देश्य हैं इस विचारधारा को स्पष्ट करने के लिए भी उपन्यासकार लिखते हैं व्यक्ति में चेतना भरना यह भी उपन्यास का दायित्व होता हैं |

"वह अपना चेहरा चेहरा" एक लघु उपन्यास हैं , उपन्यास साहित्य का जीवन से अत्यंत निकट का संबंध हैं , गोविंद मिश्र जी हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध उपन्यासकार थे ।

उन्होंने जिस तरह की घटनाएं संघर्ष समस्या और विद्रोह की ललक भर जाती हैं , उन्होंने शब्द आकार देने के लिए निम्नानुसार उपन्यासों का सृजन किया हैं , जिस पर शोधार्थी ने संक्षिप्त प्रकाश डाला हैं , इस शोध पत्रिका के अनुसार इस उपन्यास में आहट अंत: को मनोवैज्ञानिक तरह से अच्छी तरह निरूपित किया हैं, इस उपन्यास में लेखक बाबू की दुनिया में दुखी हैं , क्योंकि वह आदमी रंगों से नियंत्रित करता हैं वह ऊपर बैठकर अपने से नीचे बैठे हुए बाबू को मानवीय धरातल पर नहीं पहुंचने देता इसलिए चरित्र को प्रत्यक्ष या परोक्ष रीति में से संस्कृति के साथ सूत्रों की ओर चलता हैं "वह अपना चेहरा" उपन्यास सरकारी अधिकारियों अफसरों के रस्सा-कशी या खींचा-तानी का चेहरा बताया हैं , उन्होंने रचना तथा केशवदास की कहानी के बीच प्रेम प्रसंग को भी दर्शाया हैं ।

वह अपना चेहरा में केशवदास की पुत्री का नाम रेशमा बताया हैं जो अमरु से प्यार करना चाहती थीं , पर कर नहीं पाती क्योंकि केशवदास उनसे मिलने बातें करने नहीं देते ; फिर वह हमेशा की बातों के बारे में सोचता रहता था ।

एक बार रेशमा को पाया कुछ नहीं कर पाया , उनके प्रकार की व्यवस्था होती हैं मैंने पहले गौर से नहीं देखा इस प्रकार उसकी वह तस्वीर अगले कई दिनों तक गुजरती रही और मैं उसका पीछा करने लगा था । एक आद बार फोन करके बुला कर बातें भी की ; मेरा उसके लिए ही फोन करना या फिर उसी से बात करना रेशमा को भी अच्छा लगता होगा अभी तक उस घर से मेरा संबंध केशवदास के मार्फत था जो मेरा बड़ा अफसर था ।

निष्कर्ष

"गोविंद मिश्र" जी द्वारा रचित उपन्यास :"वह अपना चेहरा" एक छोटा उपन्यास होने के साथ-साथ बहुत ही महत्वपूर्ण माना जाता हैं , क्योंकि उसमें कई सार्थक सामाजिक चेतना को दर्शाया गया हैं ।

नारी सशक्तिकरण का स्वरूप इस उपन्यास में हमें देखने को मिलता हैं तथा कैसे बड़े अफसर लोग अपने नीचे कार्य करने वाले कर्मचारियों के प्रति अपना भाव रखते हैं उस समाज की चर्चा भी हमें इस उपन्यास में देखने को मिलती हैं ।

इस उपन्यास में चरित्र और प्रत्यक्ष परोक्ष रीति से संस्कृति के साथ स्रोतों का पता चलता हैं ।

यह उपन्यास केशवदास नामक अफसर से संबंधित हैं और यह उपन्यास उनके इर्द-गिर्द घूमते हुए नजर आते हैं इसमें मिश्र जी ने नायक और नायिका के मध्य प्रेम की भावना को भी दिखाया हैं तथा इस उपन्यास में नारी का शारीरिक शोषण भी बताया हैं , जिसे सरकारी दफ्तर में देखा जा सकता हैं ।

संदर्भ ग्रंथ

- "गोविंद मिश्र" वह अपना चेहरा , राज कमल प्रकाशन पृष्ठ, 128 2019
- मलति जोशि मालती जोशी साक्षात्कार आज तक न्यूज़ नई दिल्ली 01 अगस्त 2019।
- गोविन्द मिश्र लेखक की जमीन पेज 90।
- समकक्ष व्यक्ति समीक्षित जर्नल' अपनी माटी (ISSN 2322-0724 Apni Maati) अंक-32, जुलाई-2020।
- Parishodh Journal Volume IX, Issue III, March/2020 Page No:8588।